रानी गुप्ता

गुजरात

ये चूड़ियाँ

ये चूड़ियाँ बस काँच नहीं, एहसासों की झंकार हैं,
इनमें धड़कते प्रेम के, अनगिन सुंदर तार हैं।
जब–जब ये खनक उठती हैं, मन में सावन गाता है,
सूना आँगन भी पल भर में, खुशियों से भर जाता है।

इनकी मीठी–सी खनखन में, जीवन का संगीत बसा,
हर रंग में इक सपना जागे, हर स्वर में विश्वास बसा।
ये हँसती हैं तो लगता है, किस्मत भी मुस्काती है,
हर धड़कन को अपने संग, उम्मीदों से सजाती हैं।

ये चूड़ियाँ नारी के मन की, कोमल–सी पहचान हैं,
त्याग, समर्पण, प्रेम, दुआ का, अनुपम–सा सम्मान हैं।
इनकी रुनझुन कहती रहती—मत हिम्मत को हार कभी,
जीवन की हर राह सजेगी, रख विश्वास अपार सभी।

जब तक इनकी खनक रहेगी, घर–आँगन गुलज़ार रहेगा,
प्रेम, करुणा और अपनापन, हर दिल का श्रृंगार रहेगा।
ये चूड़ियाँ बस गहना नहीं, जीवन का त्योहार हैं,
इनमें बसते रिश्तों के, अमिट सुनहरे संसार हैं।

सावन की रिमझिम

जब–जब सावन की रिमझिम आई,
तेरी यादों ने दस्तक पाई।
भीगी पलकें, महका आँचल,
धड़कन ने फिर प्रीत सुनाई।

बादल तेरे ख़त बन आए,
बूँदें तेरा नाम लिखें।
हवा चुरा ले तेरी खुशबू,
मन के सूने गाँव दिखें।

कंगन बोले, पायल गाए,
साँसों में मधुमास खिले।
तेरी हँसी की धूप उतरते,
मेरे सारे घाव सिले।

झूले झूलें आम की डाली,
मन भी संग झूला जाए।
तेरी बाँहों का इक मौसम,
हर सावन को स्वर्ग बनाए।

मिट्टी की सौंधी–सी खुशबू,
तेरे होने का एहसास।
प्रेम अगर है सच्चा, सुन लो,
हर बरस बनेगा मधुमास।